

Vol 4 Issue 8 Feb 2015

ISSN No :2231-5063

---

International Multidisciplinary  
Research Journal

Golden Research  
Thoughts

Chief Editor  
Dr.Tukaram Narayan Shinde

---

Publisher  
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor  
Dr.Rajani Dalvi

Honorary  
Mr.Ashok Yakkaldevi

## Welcome to GRT

**RNI MAHMUL/2011/38595**

**ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

### *International Advisory Board*

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Kamani Perera Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pinteau, Spiru Haret University, Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Anurag Misra DBS College, Kanpur	George - Calin SERITAN Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences AL. I. Cuza University, Iasi	.....More
Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania		

### *Editorial Board*

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India	Iresh Swami Ex - VC. Solapur University, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University,Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yaliker Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra Maulana Azad National Urdu University
	Sonal Singh, Vikram University, Ujjain	

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**  
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org**



GRT

ग्लोबल वार्मिंग : भौगोलिक विश्लेषण

विजय कुमार

सहायक प्रोफेसर भूगोल , राजकीय महाविद्यालय, कोसली (रेवाड़ी)

**सारांश :** आज ग्लोबल वार्मिंग का मुद्दा चारों ओर छाया हुआ है। बुद्धिजीवी और वैज्ञानिकों के लिए यह शब्द चुनौती पैदा कर रहा है। ग्लोबल वार्मिंग, भूमण्डलीय तापन शब्द का प्रयोग पृथ्वी की सतह के औसत तापमान में हो रही वृद्धि या वातावरण के निचले स्तर के तापमान में हो रही बढ़ोतरी के लिए किया जाता है। हालांकि ग्लोबल वार्मिंग आज एक चिन्तनीय विषय है परन्तु इस शब्द की पृष्ठभूमि औद्योगिक क्रान्ति के बाद ही प्रारम्भ हो गई थी। ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथ्वी के तापमान में वृद्धि हुई है। पृथ्वी के तापमान वृद्धि के कारण ध्रुवों पर जमा बर्फ तेजी से पिघलने लगी है और पिछले सौ वर्षों में समुद्र का स्तर चार से आठ इंच तक बढ़ गया है। पिछले बीस वर्षों में मौसम संबंधी प्राकृतिक आपदाओं में चार गुना बढ़ोतरी हुई है। ऐसी संभावनाएं जताई जा रही हैं कि वैश्विक समुद्री स्तर में 2100 ई. तक 9 से 88 सेंटीमीटर तक की बढ़ोतरी होगी।

#### प्रस्तावना :

इसके गंभीर परिणाम होंगे क्योंकि विश्व की लगभग आधी आबादी समुद्र से 60 किलोमीटर के दायरे में रहती है। समुद्र के जलस्तर में बढ़ोतरी से इस जनसंख्या को भारी नुकसान होगा। उष्णकटिबंधीय और उप-उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वैश्विक तापमान में बढ़ोतरी खाद्य उत्पादन को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से नुकसान पहुंचाएगा। जिससे भुखमरी और कुपोषण अपना विकराल रूप धारण कर लेंगे। इससे सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष भी शुरू हो जाएगा। बारिश और तापमान में बदलाव के कारण स्वास्थ्य सम्बन्धी नई बिमारियां सर उठाएगी।

ग्लोबल वार्मिंग मानवीय गतिविधियों द्वारा उत्पन्न प्रदूषण का भयंकर रूप है। मानव ने अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु प्रदूषण को इस हद तक बढ़ा दिया है कि वायुमण्डल में कार्बन-डाई-आक्साइड तथा अन्य गैसों जैसे-मिथेन, ओजोन, क्लोरोफ्लोरोकार्बन, मिथेन, नाइट्रोजन आक्साइड आदि गैसों की वृद्धि के कारण पृथ्वी का तापमान धीरे-धीरे बढ़ रहा है। कार्बनडाईआक्साइड, ओजोन, क्लोरोफ्लोरोकार्बन, मिथेन, नाइट्रोजन आक्साइड आदि गैसों पृथ्वी के चारों ओर एक आवरण बना लेती हैं जिसमें सौर दीर्घतरंग विकिरण प्रवेश तो कर लेता है परन्तु वापस नहीं जा पाता जिस कारण पृथ्वी और वायुमण्डल दोनों का तापमान बढ़ने लगता है। इस सम्पूर्ण प्रक्रम को हरित गृह प्रभाव (Green House Effect) कहते हैं। विशेषज्ञ इस कोशिश में हैं कि ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन का स्तर कम करते हुए ग्लोबल वार्मिंग के खतरे से बचा जाए। लेकिन समय बीतने के साथ यह गर्म होती जा रही है। स्कॉटलैंड की सेंट एंड्रूज यूनिवर्सिटी के संबंधित विशेषज्ञ जैक ओ मिले जेम्स का मानना है कि इन तमाम चीजों को देखते हुए भविष्य में धरती पर जीवों का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है। वाष्पीकरण और रासायनिक प्रतिक्रियाओं के बढ़ने से बारिश के पानी के साथ कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा बढ़ती जाएगी। तकरीबन एक अरब वर्ष के आसपास पेड़-पौधों की फोटोसिंथेसिस की प्रक्रिया गड़बड़ा जाएगी। धरती पर जीवों का अस्तित्व खतरों में पड़ जाएगा और तमाम शाकाहारी जीवन खत्म हो जाएंगे। धीरे-धीरे मांसाहारी जीव भी खत्म होते जाएंगे।

ग्रीन हाउस गैसों (GHGs) का मुख्य स्रोत मानवीय गतिविधियां हैं। मानव की वर्तमान जीवन शैली मानव को ज्यादा से ज्यादा उर्जा और उपभोग के लिए प्रोत्साहित करती है। मानव ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वनों को काट डाला, पहाड़ों को उजाड़ दिया, पानी की पवित्रता और वायु की शुद्धता को समाप्त कर दिया है। मानव द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण उपयोग ही ग्रीन हाउस गैसों के स्तर को बढ़ा रहा है। गांधी जी ने एक बार कहा था कि कुदरत हमारी जरूरतों को तो पूरा कर सकती है, लेकिन हमारे लालच को नहीं।

### ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव/संकेत

- ❖ जलवायु ऋतु चक्र बदल रहा है।
- ❖ ध्रुवों पर हिमशिखर का पिघलना
- ❖ वनस्पति और जीवों के व्यवहार में परिवर्तन।
- ❖ बीमारियों और महामारियों के बदलते स्वरूप
- ❖ प्राकृतिक आपदाओं की तेजी से पुनर्वाती।
- ❖ औसत तापमान का निरन्तर बढ़ना।
- ❖ जैव विविधता का ह्रास
- ❖ समुद्री जल स्तर में वृद्धि
- ❖ भौगोलिक प्रदेशों में परिवर्तन
- ❖ पृथ्वी के उफ़सा बजट का असन्तुलित होना।

हाल ही में अमेरिका के सहस्राब्दि परितन्त्र मूल्यांकन (मिलेनियम इकरोसिस्टम्स वैल्यूएशन) के निदेशक मंडल की ओर से यह वक्तव्य जारी किया गया है कि इस पृथ्वी के प्राकृतिक क्रियाकलापों में मानव की बढ़ती दखलअंदाजी से अब यह दावा नहीं किया जा सकता है कि भावी पीढ़ी के लिए भी पृथ्वी की यही क्षमता कायम रह सकेगी। निदेशक मंडल का यह निष्कर्ष 1300 वैज्ञानिकों के चार साल के गहन विश्लेषण पर आधारित है। इन वैज्ञानिकों ने पाया कि हमारी अर्थव्यवस्था में प्राकृतिक प्रणाली से उपजी चौबीस प्रकार की सेवाएँ चल रही हैं, जैसे पीने का पानी, जलवायु का नियमन, प्राणवायु का निर्माण, उर्जा का प्रवाह, खाद्य श्रंखला आदि। इन सेवाओं में पंद्रह को हम उनके टिकाउपन की सीमा से पीछे धकेल चुके हैं। धरती का तापमान बढ़ रहा है, वन तेजी से सिकुड़ रहे हैं, जनसंख्या और वाहन बढ़त बनाए हुए हैं। साथ ही खाद्यान्न, उर्जा, धातु और इमारती लकड़ी की मांग भी बढ़ रही है। (राकेश त्रिवेदी, पर्यावरणविद्, "धरती पर बढ़ता संकट" नई दुनिया, समाचार पत्र, 27 अप्रैल, 2007)

औद्योगिक देशों द्वारा पिछली सदी में अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के लिए पर्यावरण को पहुंचाए गए नुकसान के कारण ही ये विपत्तिपूर्ण पर्यावरणीय समस्या पैदा हुई है। इस विषय पर आज वैश्विक बहस की शुरुआत हो चुकी है। इससे निपटने और इसके पैदा करने वालों की जिम्मेदारियां निर्धारित करने पर भी बहस चल रही है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ग्लोबल वार्मिंग कम करने के लिए कई उदासनी और अप्रयाप्त प्रयास किए गए हैं।

- स्टॉक होम सम्मेलन— पर्यावरण संरक्षण हेतु वैश्विक स्तर पर सर्वप्रथम 1972 में स्टॉक होम सम्मेलन का आयोजन किया गया। 5 जून को पर्यावरण दिवस मनाने का निर्णय इसी सम्मेलन में किया गया।
- मांट्रियल समझौता— वर्ष 1987 में कनाडा के मांट्रियल शहर में आयोजित इस सम्मेलन में विश्व के 48 देशों ने ओजोन को नष्ट करने वाली गैसों का प्रयोग बंद करने का निर्णय लिया।
- इंटर गर्वनमैन्ट चैनल ऑन क्लाइमेट चेंज वर्ष 1988 में पहली बार जलवायु में होने वाले परिवर्तन का विश्लेषण करने हेतु इसकी स्थापना की गई।
- रियो सम्मेलन— वर्ष 1992 में वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए रियो-डि-जेनेरिया सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में एजेंडा 21 नामक कार्यक्रम निर्धारित किया गया।
- क्योटो संधि— इसे पृथ्वी पांच ;5द्ध सम्मेलन भी कहा गया। वर्ष 1997 में आयोजित सम्मेलन में औद्योगिक देशों की 2012 तक ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में 5.4 प्रतिशत कमी करने पर सहमती बनी।
- जोहान्सवर्ग सम्मेलन— इसे पृथ्वी दस ;10द्ध सम्मेलन भी कहा जाता है। वर्ष 2002 में आयोजित इस सम्मेलन में रियो के एजेंडा 21 के कार्यान्वयन की यह दस वर्षीय समीक्षा थी। निजि वाहन के बजाए सार्वजनिक वाहन का प्रयोग अधिक किया जाए।

हमारे वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों को नियन्त्रित करने के लिए हमारी उर्जा प्रणाली में बदलाव की जरूरत है। ग्लोबल वार्मिंग को रोकने का सबसे प्रभावी तरीका यह है कि हम ऐसे तन्त्र की खोज करें जिसमें कार्बन उत्सर्जन कम होता है। आज स्वच्छ तकनीकों, उर्जा के न्यायोचित प्रयोग और ईंधन क्षमता के बेहतर उपभोग के तरीकों को अपनाने की आवश्यकता है। जीवन शैली और व्यवहार में परिवर्तन करके भी हम ग्लोबल वार्मिंग के न्यूनीकरण में योगदान दे सकते हैं:—

- ❖ कार्बन डाई आक्साईड (CO<sub>2</sub>) उत्सर्जन का स्तर न्यून करने के लिए परिवहन और औद्योगिक क्षेत्रों के लिए पुनः मानकों का निर्धारण किया जाए और उनका सख्ती से पालन किया जाए।
- ❖ वृक्षारोपण पर अधिक से अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। ट्री एक्ट मध्यप्रदेश वृक्षों का परिरक्षण अधिनियम 2001 के अन्तर्गत जो भी व्यक्ति पेड़ काटे वह उसी प्रजाति का नया पौधा लगाए। वनों के संरक्षण से सम्बंधित नीति को ईमानदारी से लागू किया जाए।
- ❖ उर्जा उत्पादन के परम्परागत साधनों के स्थान पर सौर उर्जा, पवन उर्जा आदि पर अधिक ध्यान देना चाहिए। उर्जा का विवेकपूर्ण इस्तेमाल करना चाहिए।
- ❖ पुनः चक्रीय संसाधनों के प्रयोग पर अधिक बल देना चाहिए।

❖ पर्यावरण के प्रति प्रत्येक मानव को जागरूक करें। पर्यावरण को विद्यालय और महाविद्यालय में अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए।

प्रत्येक पीढ़ी का यह कर्तव्य है कि वह अगली पीढ़ी को स्वच्छ और सुरक्षित पृथ्वी सौंपे। सम्मानजनक हस्तांतरण के लिए जरूरी है कि प्रत्येक मानव सकारात्मक प्रयास करें। यदि आज हमने इस सुन्दर धरा की सुन्दरता को नहीं बनाए रखा तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें कभी भी माफ नहीं करेगी। अतः अब जरूरी हो गया है कि क्रियाशील पर्यावरण के प्रति हम सहनशील और जागरूक बने तथा ईमानदारी से इसके संरक्षण हेतु प्रयास करें।

**संदर्भ:—**

1. पर्यावरण प्रदूषण – डॉ. वी. के. कुडेरिया
2. रघुवंशी डॉ. अरुण, रघुवंशी चंद्रलेखा, पर्यावरण प्रदूषण, म. प्र. अकादमी, भोपाल।
3. Mohan I., Environmental Pollution and Management, Ashish Publishing House, New Delhi, 1989.
4. Trivedi P.R. Sudershan R. Chisey, Global Environmental Issue, 1995.
5. व्यास हरिश्चंद्र, जनसंख्या प्रदूषण और पर्यावरण, विद्या प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. कुरुक्षेत्र पत्रिका।

# Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed, India

- \* International Scientific Journal Consortium
- \* OPEN J-GATE

## Associated and Indexed, USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts  
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra  
Contact-9595359435  
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com  
Website : www.aygrt.isrj.org